Flim Club

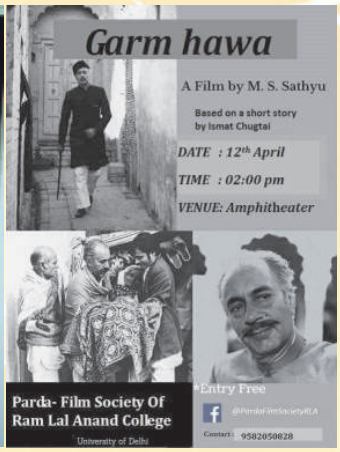

The year 2016-17 was an eventful one for the RLAC FILM CLUB which underwent a revival. The year kick started with a rigorous selection process for the office bearers and members. Its membership witnessed an encouraging and heart-warming response from the students community. Its prominence grew strong as more and more students expressed their interest in watching both popular and parallel cinema, which was followed by active discussions.

The society members organised and participated in some great movie watching events through the year. One such event organised by the Film Club the screening of the feature film MIRCH MASALA (Directed by Ketan Mehta) in the month of October'2016. The screening was followed by a Wall Graffiti competition the theme for which was 'Women in India'. The students actively took part in the competition and the Film Club received some excellent expressions of womanhood in Indian cultural space. The winners were decided on creativity and best expression.

The revival of the Club wasn't possible without the valuable support and 'behind the scene' hard work of Dr. Rajesh Sachdeva, the Convenor of the college Infrastructure Committee. Co-convenor Ms. Shachi Meena, always ready with her most useful suggestionsin the hour of need was a big support to the society.The other team members include Ms. Nidhi S. Chandra, Dr. Vijay Bhatia, Mr. Pratik Kumar,Mr. Arun Kumar and Ms. Barkha Chawla.

Pragya Deshmukh, (Convenor)

Debate and Quiz Society

Albert Einstein once said " the important thing is not to stop questioning. Curiosity has it's own lesson for existing". Curiosity remains the main force that devises questions: the Quizzing Society of Ram Lal Anand College since inception, is committed to quench the curiosity of RLAC through innovative quizzing.

It organised its first quizfest Qrukshetra 2017 on 6th March 2017 which conisisted of two quizzes. Numerous colleges participated from all over Delhi. The whole event was held under the flawless supervision of our convenor Dr. Ritambhara Mishra and Mr. Prateek, Judicious allotment of funds was made by Vyom Khandarba (Secretary). The event was a great success.

Over the time the society witnessed various accomplishment to note a few Nishant Agarwal of B.A. (H) Political Science II Year are Rastra Kunwan Maurya of BSc. (H) Computer Science II year stood 3rd in the Delhi Quiz need at St. Stephons College, Gaurang Sharma of BSc. (H) Statistics II Year and Nishant Agarwal stood Ist in the IT Quiz organized by the C.S. Department of RLA College, Yatin Panwar of B.A. (H) English I year and Nishant Agarwal Seuired the Ist Pointions in food quiz held at Sri Venkateshwara College

In the debating wing of the society two literary events were organised in our annual cultural fest Nexplora 17. Debate competition (Ignorance is not bliss) and the Slam Poetry competition (Bol Ke Tere Lab Azad Hai) were held on 3rd March, 2017 and 4th march, 2017 respectively in our college Seminar Hall. The topic for debating event was "Has student politics lost its relevance in India?" The event was bilingual 33 participants from more than 20 colleges (North campus), south campus, off- campus, private institutes) attended the event. Rs. 1500/- Ist Prize was given to Kamal Upadhyay (Kamla Nehru College). Rs. 1000/- IInd Prize was given to Smiti (Lady Shri Ram College). Rs. 500/- IIIrd prize was given to Prapti (Rajdhani College).

In the bilingul "Slam Poetry competition 29 participants attended the event. Students came from all over Delhi (north campus, south campus, off campus and private colleges). The performances were so good that the judges decided to give Ist prize to two (equal cash prize of Rs. 1500 to both winners), two IInd prize (equal cash prize of Rs. 1000 to both winners) and two consolation prizes too.

The debating society of Ram Lal Anand College is one of the most efficacious society of our college. The debate society was established on 5th October, 2016. Under the supervision of our society's esteemed conveners Mrs. Ritambhara and Mr. Prateek our society has participated and won prizes from inter college debate competitions to National Level Debate competition and has created quite a reputation in the "Dus Debate Scenareo". The society consist of 7 members (Sidharth, Vyom, Vaishnavi, Payal, Apoorba, Ayush and Shubhang).

We organized the following events in the college :-

(i) Arguing for a Reason an interactive panel discussion where various prominent speakers like Prof. Bhagwan Josh, Shri Prafulla Ketkar, Dr. Dhananjay Singh and Dr. Heeraman Tiwari spoke on the Art of Debating.

(ii) Inter college debate (bilingual) on the topic Tolerant or Intolerant India?

Co-operative conveners, hard working society members and non members helped our society. Special mentions Divesh Kumar, Khatib-ur-Rehman, Roshan Rai, Abhishek, Sukanya Dev.

Siddharth
B.A. (Prog) IIIrd Year

मैं दिल्ली का गरीब हूँ

जहाँ हैं, बड़ी–बड़ी इमारतें
पर्यटन स्थल और शीश महल
वहीं है मेरा एक टीन का घर
बस मैं खुश हूँ कि मैं दिल्ली का गरीब हूँ।

जहाँ सुबह होते ही बच्चे
निकल जाते हैं अपने स्कूल
वहीं घर बैठा करता कपड़ों को इस्त्री मैं
बस मैं खुश हूँ कि मैं दिल्ली का गरीब हूँ।

जहाँ माँ–बाप दिलाते हैं बच्चों को
हर एक दिन नया उपहार
हैं माँ–बाप मेरे भी–बीमार और लाचार
बस मैं खुश हूँ कि मैं दिल्ली का गरीब हूँ।

जी करता है पापा से बोल दूँ
जा रहे बच्चों के साथ, मुझे भी भेज दो
फिर न जाने कौन सी शक्ति कंठ रोक,
नयनों से ही बोल दिया
बस मैं खुश हूँ कि मैं दिल्ली का गरीब हूँ।

आदित्य यादव
बी.ए. हिन्दी (विशेष), द्वितीय वर्ष

वक्त

वक्त कभी रुकता नहीं
बचपन में माँ जो लोरियाँ सुनाती थीं वह याद तो आती हैं
पर माँ के साथ बिताने का वक्त नहीं
दोस्त तो हैं पर दोस्ती निभाने का वक्त नहीं
आँखों में नींद तो आती है पर सोने का वक्त नहीं
फोन तो आते हैं पर फोन उठाने का वक्त नहीं
टी.वी. देखने का मन तो करता है पर वक्त नहीं
खेलने का मन तो करता है पर वक्त नहीं
नाचने घूमने का मन तो करता है पर वक्त नहीं
पढ़ाई में इतने उलझ जाते हैं कि माँ की कही
हुई बातें याद रखने का भी वक्त नहीं।

नेहा शर्मा
बी.ए. हिन्दी (ऑनर्स), द्वितीय वर्ष

बिदाई

पहली बार जब मैंने देखी एक बिदाई
तब जाना लड़की कैसे होती तुरंत पराई
यह दृश्य देखकर सबकी आँखें भर आयीं
आशीष दिया, उपवन सा ससुराल सजाए।

देखा, माँ बार–बार बेटी को समझाती है
भावुक होकर पिता की छाती से लिपट जाती है
भाई को देखती, बहना को समझाती
कि तुम्हीं हो अब से यहाँ की भारती।

माँ की आँखों में साफ झलक रहा था
कि 'सबल बन', पर मुख कुछ न बोल रहा था
पिता ने कहा एक भाव से परिवार को सींचना
अत्याचार हो तो अंधेरे में आँखें न मीचना।

शोर हुआ, द्वार पर खड़ी हो गई डोली
एक तरफ पिता तो पति दूसरी तरफ कुछ न बोली
चल पड़ी आँगन में खेलने वाली अंगना बनकर
मर्यादा का घाघर और दायित्व का चुनर ओढ़कर।

मैं चुपचाप सारे दृश्यों को देखता रहा
करूण होकर हृदय भी रोता रहा
माँ ने क्यों कहा था, तब जाकर जाना
''लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई न देना।''

सौरभ सुमन
बी.ए. (ऑनर्स)–इतिहास, तृतीय वर्ष

जीवन का यथार्थ

मानव जीवन का शुरूआत से ही वर्चस्व रहा है। हम सब प्राकृतिक प्राणी हैं अर्थात् इस पृथ्वी पर मानव जीवन जीने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। पुरुषार्थ करने से सफलता की प्रबल इच्छा भी व्यक्त करते हैं। क्या हम सब को जीवन में यथार्थ या मूल्य का बोध है? हमारी इच्छा, हमारे सपने इन सभी को पूरा करने का प्रयत्न एवं पुरूषार्थ का भाव रखते हैं।

मैंने भी इस छोटे से जीवन की गहराई को समझने की कोशिश की है। आज मानव जाति अपने पुरूषार्थ को करने लगा है। धर्म–कर्म के अर्थों को भलीभाँति समझने लगा है। फिर भी समाज में कुछ हद तक असंगत, अनुचित, अकुशल, छल–कपट, अभिमान में लिप्त दिखाई पड़ते हैं। यह एक मिथ्या जान पड़ता है। हम मनुष्य का पुरुषार्थ करने का तरीका भिन्न–भिन्न प्रकार से है। कोई जीत पर घमण्ड, अहंकार, करने का पुरुषार्थ को समझता है और कोई हार कर भी हिम्मत को बाँधे रखता है। जीवन जीने की यह अद्‌भुत प्रेरणा, चींटी द्वारा बार–बार प्रयत्न कर अपने से पाँच गुना ज्यादा वजन लेकर चलना, गिरना, फिर चलना और अंत तक पुरुषार्थ करते रहना, यही असली जीवन का बोध कराता है। मनुष्य को स्वयं पर विश्वास करना चाहिए एवं अंत तक प्रयत्न करना चाहिए। यही सफल जीवन का यथार्थ है।

जीवन का है यही यथार्थ
पुरुषार्थ, पुरुषार्थ, पुरुषार्थ

शिवानी नेगी
बी.ए., हिन्दी (ऑनर्स)
द्वितीय वर्ष

बलिदान

जो मंजिल पानी है मुझे
क्या उसकी यही राह है
कभी औरों का तो कभी
अपनों की खुशियों का बलिदान है।

जो जीत पानी है मुझे
क्या उसकी यही पहचान है
कभी स्वयं सम्मान
कभी उसूलों का बलिदान है।

जो वजूद पाना है मुझे
क्या उसकी यही चाह है
कभी मेरी इच्छा
तो कभी मेरी मोहब्बत कुर्बान है।

बलिदान का ये वाक्य
क्या नसीब से जुड़ा है मेरे
या यही नसीब–ए–हाल है सबके।

जो मंजिल पानी है मुझे
क्या उसकी यही राह है
कभी औरों का तो कभी
अपनों के खुशियों का बलिदान है।

अभिषेक आनन्द
बी.ए. इतिहास (ऑनर्स)
तृतीय वर्ष

दबी सी आहट

दबी–सी एक आहट है तू
कोई सुन ना ले ऐसा आगाज है तू
खोई–सी न जाने कहाँ दुबकी है तू
क्या कोई राज है जो छुपा रही है तू
दबी–सी आहट है तू.....

रोती मन से पर करती हँसने का नाटक तू
इन्सान ही है या फिर है नाटक का पात्र तू
जिंदा होकर भी क्यों परायेपन का आभास देती है तू
जाने क्या उलझन है तुझे, जो कह न पाती है तू
दबी–सी आहट है तू.....

क्यों हँसना भूल गई है तु, जैसे मुस्काती थी पहले तू
जब बल खाती–लहराती चलती थी तू
सारे घर में चिड़ियाँ बनके कूंकती थी तू
जाने अब क्या हो गया है जो हँस नहीं पाती तू
दबी–सी आहट है तू.....

हवा–सी सनसनाती आती है तू
हल्का सा आभास कराती है तू
शान्त संगीत के सुरों की तरह
मन की शान्ति का जरिया है तू
दबी–सी आहट है तू.....

रविन्द्र कुमार
बी.ए.हिन्दी (विशेष)
द्वितीय वर्ष

भोर हुआ

भोर हुआ, मैं खिड़की पर आया
प्रकृति का रूप मुझको भाया
एक हवा का झोंका आया
चेहरे पर ठण्डक पहुँचाया
उपवन की वह परछायीं
आँखों को नमी पहुँचाए
सूरज की वह पहली किरण
हर ओर प्रकाश फैलाए
कोयल की वह कु–कु
भर गई मुझे उल्लास से
नदी की कलकलाहट
एक संगीत सुनाए प्यार से
पशुओं की सुगबुगाहट
उम्मीद जगाए सफलता की।
पवन पत्तों से टकराए
सर्सराहट की आवाज आए
लड़ने की एक हूक जगाए
शबनम की बूँदें
लबों पे आकर बैठ जाए।
जो कुव्वत का पाठ पढाए
ये सुबह रोज आए
जो जीवन का सलीका सिखाए।
भोर हुआ मैं खिड़की पर आया
प्रकृति का रूप मुझको भाया।

अभिषेक आनन्द
बी.ए. (ऑनर्स), इतिहास
तृतीय वर्ष

सृष्टि की रचना–औरत

एक दिन घर से अचानक ही यूं निकल पड़ा
कुछ देखने की इच्छा से कुछ करने की इच्छा से।
किसी ने दिल को ठेस पहुँचाई थी
यू कहिए मेरे ईगो (Ego) को वो बात रास न आई थी।
क्यों घर में पापा बेटी–बेटी करते हैं
क्यों बेटा शब्द भूल जाते हैं।
क्यों ये भेदभाव होता है
बेटी के चक्कर में बेटा क्यों रोता है।
तभी देखा बाग में एक सज्जन को
जो रोज मुझे मिलते थे जीवन की राह में।
उनकी बातें मजेदार थीं, हँसी उनके चेहरे पर बरकरार थी
ऐसा लग रहा था कि वो मुझे देख रहे हैं और मन की व्यथा समझ रहे हैं।
बिना कुछ पूछे, बिना कुछ कहे, मुझे लगे स्वयं समझाने
इस सृष्टि की सबसे सुंदर रचना है औरत
हर घर की जरूरत है औरत
एक पल एक लम्हा जिसके बिना न बीते वो है औरत
हर रूप में वो महान है वरदान है औरत
हर रूप में हमें कुछ दे जाती है औरत
बहनें जब हँसती हैं, लड़ती हैं तो भाई की दुआ बन जाती है औरत
माँ खिलाती है, पिलाती है ईश्वर की तरह बन जाती है औरत
जीवन की संगिनी–अर्धागिनी है औरत
ईश्वर की हर दुआ है औरत
सब कुछ सह जाती है बिना कुछ कहे
पर हम पुरूष न जाने क्यों सदैव उनसे लड़े।
क्यों हम उनकी उम्मीद पर खरे नहीं उतरते हैं
जबकि उम्मीद में भी उनकी हम ही बसते हैं।
उनकी कामयाबी हमारे लिए एक फांस है
जबकि उनकी कामयाबी ही हमारी आस है।
इस सज्जन की बातों ने दिल को छुआ
पिता के प्रति जो गुस्सा था वह दूर हुआ।
अपनी गलती पर पछताया
जाकर पिता को समझाया।
हमेशा रखूँगा उनकी लाडली का ध्यान
जो देख नहीं सकती फिर भी करती है सारे घर के काम।
अब मैं उसका भाई नहीं उसका शिष्य बन गया
क्योंकि जीवन का हर रूप सीखने का एक नया ढंग बन गया।

संजय
बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति विज्ञान
तृतीय वर्ष

नाभिकीय आपूर्तिकर्ता समूह

मई 1974 में भारत ने जब अपना परमाणु परीक्षण किया तो इसके जवाब में एन.एस.जी. का गठन किया गया। यह परमाणु आपूर्तिकर्त्ता देशों का समूह है जो कि ऐसे परमाणु उपकरण, मटेरियल और टैक्नोलॉजी के निर्यात पर रोक लगाता है जिसका प्रयोग परमाणु हथियार बनाने में होता है और इस प्रकार यह परमाणु प्रसार रोकता है। अभी इसमें कुल 48 देश शामिल हैं और इनकी पहली बैठक मई 1975 में हुई। यह देखा गया कि न्यूक्लियर टैक्नोलॉजी को जनकल्याण और ऊर्जा प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। वहीं यह युद्ध के लिए भयंकर परिणाम देने वाले हथियार बनाने में भी किया जा सकता है। इस हालात में ऐसे परमाणु हथियारों और न्यूक्लियर टैक्नोलॉजी पर रोक लगाना जरूरी है और ऐसा तभी संभव है जब इन से जुड़े साधनों के आयात और निर्यात पर लगाम लगाई जाए। ऐसे में वो देश जिन्होंने एन.पी.टी. संधि पर हस्ताक्षर किया था उन्होंने इस बात पर विचार किया। इसमें शामिल एक देश ऐसा भी है जिसने एन.पी.टी. पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं। लेकिन फिर भी फ्रांस को नाभिकीय आपूर्ति समूह में शामिल कर लिया गया है। एन.एस.जी. में शामिल देश परमाणु उपकरणों के निर्यात के लिए सहमत नियमों को क्रियान्वित भी करता है।

भारत 2008 से ही इसकी सदस्यता पाने के लिए कोशिश कर रहा है। परन्तु शुरुआती दौर में काफी देशों ने विरोध किया जैसे–ऑस्ट्रेलिया, मैक्सिको, स्विटजरलैण्ड, चीन इत्यादि।

अमेरिका क्यों चाहता है कि भारत इसका सदस्य बने?

1968 में परमाणु अप्रसार संधि हुई थी। इस संधि में यह था कि जो परमाणु हथियार सम्पन्न राष्ट्र 1 जनवरी 1967 के पहले परमाणु परीक्षण कर चुके हैं वह इस संधि का हिस्सा हो सकते हैं। स्वाभाविक सी बात है तब भारत इसका हिस्सा नहीं हो सकता था क्योंकि भारत ने तब तक परमाणु परीक्षण नहीं किया था। 2006 में अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश भारत आए। उन्होंने भारत के साथ परमाणु व्यापार संबंध बनाने की कोशिश की परन्तु एन.एस.जी का हिस्सा नहीं था। अतः परमाणु टैक्नोलॉजी ट्रांसफर नहीं की जा सकती थी। बुश ने एक कदम आगे बढ़ाते हुए 2008 में इंडो–यूएस सिविल न्यूक्लियर डील की और भारत ने भी अपने सैन्य परमाणु कार्यक्रम और सिविल परमाणु कार्यक्रम को अलग–अलग करने की सहमति जताई। भारत ने अपने निर्यात के नियमों को एन.एस.जी. एम.टी.सी.आर. के अनुसार किया। अमेरिका के सहयोग के कारण भले ही भारत एन.एस.जी. का सदस्य नहीं है लेकिन उसके साथ एन.एस.जी. के सदस्य जैसा ही व्यवहार होता है।

भारत की एंट्री को लेकर चीन को क्या समस्या है?

चीन और कुछ अन्य देश यह कहते हैं कि भारत ने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं। अतः भारत इसका सदस्य परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर न करने वाले देशों के लिए एन.एस.जी में सदस्यता के लिए जो मापदण्ड है उस आधार पर बन सकता है, न की सामान्य विधि से क्योंकि अगर भारत की सामान्य विधि से उन्होंने सदस्य बना दिया तो और भी देश उसी प्रकार की एंट्री लेना चाहेंगे।

भारत ने एनएसजी की सदस्यता के लिए सियोल में हुई मीटिंग में अपना क्या पक्ष रखा?

भारत की ओर से कहा गया कि 2008 में भारत को एन.एस.जी के देशों के साथ परमाणु व्यापार करने की छूट दी गई थी अतः भारत को अब एन.एस.जी. में सामान्य विधि से एंट्री दी जाए। भारत को उस समय यह छूट इसलिए दी गई थी क्योंकि उस समय यूएस–चाइना संबंध काफी अच्छे थे। परन्तु आज दक्षिण चीन सागर में चीन के व्यवहार के कारण दोनों देशों के संबंध काफी बिगड़ गए और वह एन.एस.जी. में भारत की सदस्यता का विरोध भी कर रहा है।

सौरभ मिश्रा,
बी.जे.एम.सी., प्रथम वर्ष

नवरक्त का परिचय

आंदोलन की हवा बह रही है,
आँधी अपना रुख पकड़ रही है,
चारो तरफ रणभेरी बज रही है,
मोहन के पथ पर भीड़ चल रही है।

ए नौजवान! तू इस अन्धकूप में क्या कर रहा है,
यूं बैठकर सोच रहा है और बाहुबल को निहार रहा है।
क्षमता बहुत रखते हैं पर करते हैं बहुत कम,
सत्तर पथ पर चल रहे हैं, क्या सत्रह को नहीं है दम।

भ्रष्टाचार गुलामी की जंजीरें तोड़ फेंको,
पुनः एक बार पूर्व आर्यावर्त्त निर्माण कर डालो,
हवा से बातें करना नहीं आता या आंधी से डर लगता है,
रणभेरी नहीं बजती यह फिर भीड़ में खोने से डर लगता है।

अपने द्वार के साँकल को तोड़ डाल, रच नया इतिहास,
हाथों से पताका गाड़ना यही आएगा प्रकृति को रास।
आज़ादी कोई सौदा नहीं है जो बाज़ार में मिल जाए,
संघर्ष एवं त्याग करने वाले ही स्वतंत्रता को पाएं।

विलास छोड़ न रह भोग में लिप्त,
हल चलाना सीख कर धरती को तृप्त।
ताश के घर ढ़ाह दो, एक इमारत बना डालो,
जो हो त्यागियों के लिए कुछ ऐसा कर डालो।

जवान, तुम्ही हो किसान व विज्ञान कला के,
पूर्ण कर सकते हो तुम्हीं सकल हिन्दुस्तान के।
सीख कुछ शहीद–ए–आजम को देखकर,
कर मातृभूमि की सेवा निस्वार्थ होकर।

कायर तो अपनी मौत मरते हैं बार–बार,
वीर बन क्योंकि निर्भीक मरते हैं एक बार।

सौरभ सुमन
बी.ए. (ऑनर्स)– इतिहास
तृतीय वर्ष

हार से तो सीखी हूँ

हार से मैं सीखी हूँ
मुश्किल से मैं जीती हूँ
जीवन के इस खेल को
हार कर ही तो सीखी हूँ।

कभी न तुम होना निराश
मन में न घृणा को आने देना
जीवन के इस पथ पर
उथल–पुथल मचती हर पल
खुद पर रखना विश्वास।

कर्म हमेशा अच्छे करना
न मन में आने देना बुरे विचार
कठिन समय में संयम रखना
सफलता पाकर कठिन
समय को याद रखना।

पेड़ की तरह ऊँचे उठना
पर झुककर हमेशा चलना तुम
चींटी को याद करना
पुरुषार्थ अगर सीखना हो तो
मन में यह विश्वास रखना
संयम अपने साथ रखना।

आज हार से मैं सीखी हूँ
मुश्किल से मैं जीती हूँ
जीवन के इस खेल को
हार कर ही तो सीखी हूँ।

शिवानी नेगी
बी.ए. हिन्दी (ऑनर्स)
द्वितीय वर्ष

बेटी हूँ, बेटा नहीं

आज मेरी माँ दुखी है क्योंकि
वो जानती है कि जो आने वाली है
बस कुछ ही महीनों में वो
बेटी है, बेटा नहीं।

दादी कुछ खुश है तो क्या उनको मालूम नहीं
कि जो आने वाली है वो बेटी है, बेटा नहीं

आज मेरी माँ रो रही है
बहुत पीड़ा में है, परन्तु
दर्द इस बात का ज्यादा है
कि मैं बेटी हूँ, बेटा नहीं।

पापा और दादी जी बड़े खुश हैं
कि खानदान का चिराग आने वाला है
फिर अगले ही पल न जाने क्या हुआ
सबके चेहरे का रंग मानो उड़ सा गया था
जब उन्हें पता चला कि जन्म लेनी वाली
बेटी है, बेटा नहीं।

माँ ने मुझे कुछ देर तो पहले आँसू भरी निगाहों से देखा
फिर काँपते हुए हाथों से उठा कर अपने सीने से लगा लिया
शायद माँ जानती थी अब आगे क्या होगा
क्योंकि वह भी तो एक बेटी थी, बेटा नहीं।

माँ, क्यों दादी ने थाली पटक दी
क्यों मुझे देखने भी नहीं आईं
आखिर वो भी तो एक बेटी है, बेटा नहीं

क्यों पापा मुझसे प्यार नहीं करते
क्यों दादाजी मुझसे कभी दुलार नहीं करते
क्यों तुम भी चुपचाप सब कुछ सहती हो
क्या तुम्हें भी इस बात का अफसोस है
कि मैं तुम्हारी बेटी हूँ, बेटा नहीं।

वाह! रे समाज
यहाँ सबको अपने घर में लक्ष्मी समान
बहू तो चाहिए लेकिन बेटी नहीं।

यहाँ सबको अपने लिए आदर्श
पत्नी तो चाहिए लेकिन बेटी नहीं

यहाँ सबको ममता, छाया देने वाली
माँ तो चाहिए लेकिन बेटी नहीं

यहाँ सबको खानदान का चिराग
देने वाली जननी तो चाहिए लेकिन बेटी नहीं

यहाँ सबको बस बेटा चाहिए
बेटी की कामना कोई नहीं करता

चाहे कोई भी मुझे न अपनाये
चाहे सिर्फ मेरे हिस्से में नफरत ही आये
इतनी नफरत मिलने के बाद भी
मेरे दिल में सबके लिए केवल
और केवल आदर और स्नेह है
क्योंकि मैं एक बेटी हूँ बेटा नहीं।

प्रतिक्षा मिश्रा
हिन्दी (ऑनर्स)
द्वितीय वर्ष

16 दिसम्बर

दिल्ली नगर सड़क चौड़ी थी
सोलह दिसम्बर रात घनी थी
निर्भया उस दिन खुश थी
संग अपने दोस्त के थी
पर क्यों वह अहसास न कर सकी थी
क्या पता था उसे कि आज उसकी आबरू
हैवानों के हाथों तार–तार होगी।

अरमानों में उड़ी हुई सपनों को लिए हुए
विचरण कर रही थी वो एक स्वच्छंद पंक्षी की तरह
क्या पता था कि आज बाज से होगा प्रहार
स्थिति विकट पर सहमी हुई सी लग रही थी
क्या हो रहा था आभास उसको कि आज
आबरू हैवानों के हाथों तार–तार होगी।

आई एक बस लेकर मौत का पैगाम
दोनों चल रहे मस्ती में बेकारण बेकाम
चढ़े बस में हुआ आभास, नहीं हुआ अच्छा अहसास
नज़रें उठी देखा चारों ओर सिवाय हैवानों
के दिखा न कोई और।
पर क्या पता था कि आज आबरू
हैवानों के हाथों तार–तार होगी।

इधर भी हुआ उधर भी हुआ
किया हैवानों ने आबरू पर प्रहार
दोस्त बचाने आया आबरू
हैवानों ने किया उसका बुरा हाल
बेसुध पड़ा रहा बेचारा निहत्था बेसार
हो रही आज आबरू अबला की
हैवानों के हाथों तार–तार

रोती, बिलखती लड़ती, साहस जुटाती
करती रही गुहार
मुझे छोड़ो, मुझे जाने दो
भगवान से डरो की आने लगी चीत्कार
फिर भी दिल ना पिघला हैवानों का
किया शरीर पर गहरा आघात
करते रहे मिलकर दुष्कार
दिल वालों की दिल्ली में आबरू
अबला की हैवानों के हाथों हो रही तार–तार

हुई खबर जगा सारा संसार
देखो सुनो हुई अबला की आबरू तार–तार
खबरें बनी मीडिया जागा
किया इकट्ठा सारा संसार
जुलूस निकाला, मोमबत्ती जली
अमर ज्योति पर हुआ एक पूरा संसार
दामिनी, दामिनी के नारों से
गूंज उठा सारा दिल्ली महानगर

क्या हुआ जुलूसों, धरनों से
मर गयी एक और बिटिया इन हैवानों के हाथों से
मन को बदलो, सोच को बदलो
न करो दुष्कार किसी अबला से
देखों घर में एक बार फिर करो विचार
आज दामिनी क्या पता अगली हो अपने परिवार से
चली गई दामिनी लड़कर, सहकर इन हैवानों का अत्याचार
चुप हो गया मर गया फिर से यह सारा संसार

रविन्द्र कुमार
बी.ए. हिन्दी (ऑनर्स)
द्वितीय वर्ष

जलता बचपन

क्यों मेरा बचपन जला रहे हो
पेट की आग बुझाने को
क्यों मेरा भविष्य जला रहे हो
खुद की भूख मिटाने को।

हाँ, मैं हूँ गरीब
इसमें भला क्या दोष मेरा
क्यों हर पल मुझको मार रहे हो
तुम अपना आज बचाने को।

कभी बीच सड़क, कभी अखबारों में
कभी फूलों के बहाने में
कभी लोगों की क्षुधा बुझाने में तो
कभी हमउम्र का हुक्म बजाने में
क्यों मेरा बचपन बीत रहा है
ये तेरा घर चलाने में।

छोटे से कंधों पर लादी गई जवानी क्यों
सब खेल–खिलौने छूट गए
सब सपने टूट गए
सारा बचपन जल गया मेरा
बापू तेरा घर चलाने में।

कभी मैं झाड़ू लगाता
कभी किसी के जूते चमकाता
कभी किसी की चाय बनाता
कभी किसी की भूख मिटाता।

क्या दिया इस समाज ने मुझको
जो आज मुझसे आस लगाता है
मेरा सारा बचपन खाकर
मुझे ही अपराधी ठहराता है।

अरुण कुमार
राजनीति विज्ञान (विशेष)
द्वितीय वर्ष

खोए अरमान

कुछ थे मखमल पर सोए
कुछ का बचपन सड़क किनारे
तारों की छाँव में सोए
और सरकार सत्ता के नशे में मदमस्त होए।

काश! सोचता कोई गरीब का भी कोई अरमान होता है
शायद होती कलम और खिलौना उन हाथों में
जिन हाथों में भीख मांगने के लिए कटोरा होता है

काश! होता पता इंसानियत को, कि रोज़ इन्हें
अपने आँसुओं से प्यास को बुझाना होता है
और भूखे पेट को समझाना होता है।

काश! होता कोई सोचने वाला कि
गरीब का भी कोई अरमान होता है

प्रिंस
बी.जे.एम.सी., प्रथम वर्ष

स्लोगन

जब है नारी में शक्ति सारी,
तो फिर क्यों नारी को कहें बेचारी।

महिलाओं को दे शिक्षा का उजियारा,
पढ़–लिख कर करें रोशन जग सारा।

नारी का करो सम्मान, तभी बनेगा देश महान
भेदभाव जुल्म मिटायेंगे, दुनिया नई बसाएंगे।

मैं भी छू सकती हूँ आकाश.. मौके की है मुझे तलाश
जिम्मेदारी नारी रही है उठा, ना कोई शिकायत न कोई थकान।

महिलाओं को दो इतना मान, कि बढ़े हमारे देश की शान।

बबीता
बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी
द्वितीय वर्ष

बेज़ार दुनिया

काश की इस दुनिया में खुशहाली होती, कहाँ खो गया है ये चैन–ओ–अमन।
क्यों सिर्फ दर्द की चीखें हैं सुनाई देती, ओ इंसानों! क्यों दरिन्दा बन गया है तुम्हारा मन।

ठहरों! रुको, सोचो! कुछ इंसानियत बयाँ करों अपने करमों से,
कुछ तो मुहब्बत और हमदर्दी लाओं अपनी रूह में।
क्यों हैं ये हाथ बढ़ते तुम्हारे, आज लोगों के कत्ल की ओर, किसी के जिस्म की ओर,
कुछ तो खौफ करो उस खुदा से।

हर रूह आज रो रही है, तड़प रही है, जिसके घरों को तुमने उजाड़ा है।
हर वो आह कह रही है, अब हमारा किसके सहारे गुजारा है।
काश की थोड़ी सी जो हया तुममें होती
तो आज इस दुनिया में खुशहाली ज़रूर होती।

काश की तुम ये समझ पाते, खुदा ने था हम सभी को एक मकसद से बनाया
पर उस नेकी को भूल, कितनों ने तो उसकी उम्मत को है शर्मसार कर डाला।
पूरी दुनिया का है हाल वही, आज हमारा हिन्द भी जल रहा है।
कहीं कश्मीर की कराहना है, तो कहीं वो उबल रहा है।

कहीं कोई माँ गमज़दा है, अपने बेटे के गम में, तो कहीं कोई अहिल्या अपने शौहर के मातम में
और कहीं किसी फरज़न्द के सर से है साया गया, अपने वालदेन का,
अब वो किसके सहारे जिएं, क्या वो अब कभी किसी निशात को जी पाएगा।

कौन भला किसको समझा सकता है, आज तो सभी बस जीत की तसादमं में लगे हैं
ये ज़मीन हमारी, ये ज़मीन तुम्हारी कि झड़प में, कितनी ही जिंदगियाँ मौत को गले लगीं हैं।

उन गोलियों की बरसात में कहीं जीत का जश्न है, तो कहीं हार का गम।
मगर इस घमासान में जिंदगियाँ और इसे जीने की आस बची है कितनी कम।
क्यों हमने इस जन्नत को आग लगाई है, क्या जिंदगी की कीमत भूल गए हैं हम?

ओ खताकारों! उस खुदा का ख्याल करो, उसमें ईमान ला काश तुम खुद को रोक लेते
क्यों ना इस नफरत की आग को बुझा कर चैन और सुकून से मुहब्बत कर लेते।
काश तुम हथियार फेंक देते, काश कि तुम खुदा के नेक मकसद को पहचान लेते
तो आज ये दुनिया शायद बेजार नहीं होती, बेज़ार नहीं होती।

दिव्या सिंह
कम्प्यूटर साईंस, प्रथम वर्ष

बदलो तो सही, तभी समाज सुधरेगा

हमारे देश में एक वेश्या और एक अभिनेत्री को अलग–अलग नज़रिये से देखा जाता है। ऐसा क्यों? आखिर क्या अंतर है दोनों में जो, हमारे देश या समाज के लोग दोनों को अलग–अलग नजरिये से देखते हैं? अभिनेत्री टीवी पर झूठा स्वांग रचती है जो लोगों का मनोरंजन करने और चन्द पैसे कमाने के लिए अपनी शारीरिक सुन्दरता का प्रयोग करती है। परन्तु वेश्या किसी मजबूरी वश पापी दुनिया में धंसती चली जाती है। वेश्या लाखों लड़कियों की इज्जत अपनी इज्जत बेचकर बचाती है। भूखे–भेड़ियों के सामने अपने शरीर का सौदा करती है। भले ही पटकथा, नाटक, हॉलीवुड, बॉलीवुड इत्यादि में ये सिर्फ मनोरंजन का माध्यम होगा। परन्तु सत्य तो ये ही है अभिनेत्रियों के अंग प्रदर्शन के कारण बहुत सी मासूम वेश्या बन जाती हैं।

कुछ बच्चियों को तो बचपन में ही कुछ दरिन्दे चन्द पैसों के लिए उन्हें कोठों पर बेच देते हैं। फिर उन्हें पूरी जिन्दगी कोई स्वीकार नहीं करता और वेश्या का कलंक लेकर वह पूरी जिन्दगी घूमती है, जिससे वे मासूम बड़े होते–होते माँ–बाप द्वारा रखा गया प्यारा सा नाम तो मानो जैसे भूल ही जाती है और एक नये नाम का नामकरण हो जाता है (वेश्या)।

वैसे लड़कियों को दाँव पर लगाना तो राजा–महाराजा के समय से चलता चला आ रहा है जैसे पाण्डवों ने अपनी पत्नी द्रोपदी को दाँव पर लगाया था। बस आज फर्क इतना है पहले ये खुलेआम नहीं होता था जैसे की आज होता है। यह सब बदला है क्योंकि हमारा समाज बदलना नहीं चाहता। जिसे मैं एक कविता के माध्यम से व्यक्त करना चाहूँगी।

अब स्थिति बदल गई
नापाक हरकत बढ़ गई
हर मोड़ पर एक शैतान खड़ा
पुलिस भी अब उस वक्त आँखें मूँदे बैठी रही
जहाँ घटना घटती रही
काली कमाई खाती रही
बस पेट फुलाती रही
जुआरियों और समाज के ठेकेदारों और
नेताओं के पीछे दुम घुमाती रही
घटना घट जाने पर आत्महत्या करार देती रही
आखिर ये घड़ा कब फूटेगा
आखिर ये समाज कब सुधरेगा

निर्भया हत्याकांड इसका जीता–जागता उदाहरण है। उसे तो एक ने नहीं कई लोगों ने लूटा। जिस मासूम को अपना शिकार बनाया और गुड्डा–गुड़िया का खेल समझकर खेला और उस गुड़िया के खराब हो जाने के बाद नंगा कर रोड पर फेंका। क्या ये ही पहचान है इंसानियत की? आखिर क्यों नहीं समझा वो इंसान जब इस काम को अंजाम देता है। मेरा भी घर पतवार होगा। क्यों नहीं सोचा उसकी भी बेटी होगी? वो भी बड़ी होगी, वो भी घर की दीवार फांदेगी उस पर भी लोगों की नज़र पड़ेगी फिर वो भी आँखों में खटकेगी। जैसे ही वो बढ़ेगी फिर उसे बेटी की चिंता सताएगी। लेकिन हम सिर्फ दोष एक ही इंसान को नहीं दे सकते। कुछ हमारे ज्यादा ही आधुनिक बनने की दिशा ने इंसान को पागल ही बना दिया है। टीवी पर अभिनेत्रियों के अंग प्रदर्शन के कारण ही नई पीढ़ी पर ज्यादा प्रभाव पड़ा है। आज की युवा पीढ़ी अभिनेत्रियों को मनोरंजन के तौर पर देखती है। लेकिन दूसरी तरफ किसी आम लड़की के साथ नापाक हरकत को अंजाम देते हैं। इसके लिए बहुत से लोग लड़कियों की तस्करी, लेनदेन और कुछ लोग तो उन्हें कोठों पर ही बेच देते हैं और समाज से वंचित कर वेश्या बना देते हैं। इसका एक ही कारण है अशिक्षा। अशिक्षित ही इन सबका सबसे बड़ा दुश्मन है।

प्रीति
बी.ए. (ऑनर्स)
प्रथम वर्ष

सब ठाठ पड़ा रह जाएगा, जब लाद चलेगा बंजारा

जब–जब मैं नयनों को खोलूँ
तब–तब देखूँ नए नज़ारे
जो नयनों को भी लगते प्यारे
देख चकाचौंध सबका जी ललचाए
पर हर कोई कैसे सब कुछ पाए

जीवन सम विषमता का खेल
ताल–मेल का ना दिखता मेल
कुछ के चेहरे चन्द्रमा से चमके
कुछ के मुरझाए हुए से पात

कोई मखमल के बिस्तर पर सोए
कोई खाने के लिए भी रोए
बीच लोगों के कैसा अन्याय
कैसे समाज में समता लाए

जन–जन का यही है रोना
पेट के लिए झूठ को ना पड़े धोना
पाना सभी को है सब कुछ
रोटी कपड़ा और मकान
चाहे बूढ़ा हो फिर कोई जवान

जवानी का जलता जोश
देख अन्याय न रहता होश
बेचारे संस्कार के मारे
ठोकरें खाकर किस्मत को कोसे

कुछ लोगों के अलग विचार
विचारों से भरा है यह संसार
कुछ लोग अपने रास्ते खुद बनाते
कुछ दूसरों के पैर ही काट जाते

कुछ लालच के इतने मारे
धन दौलत पर सब कुछ वारे
माता पिता का न रहता कोई ज्ञान
फिर कैसे करता है कोई सम्मान
चकाचौंध, राजसी ठाठ–बाठ
बन गए जीवन के महत्वपूर्ण अंग
मानवता को किया जिसने भंग
माता–पिता का प्यार, और ममता
भाईचारे का भी न चढ़ता कोई रंग

रिश्ते नाते को छोड़
मानव रहा पैसों के पीछे दौड़
चला गया ना जाने किस ओर
जहाँ न किनारा था न कोई छोर

चकाचौंध में ऐसा अंधा
पैसा कमाना बन गया धंधा
पैसों ने कठपुतली सा नचाया
भाई को भाई ने मरवाया

फिर भी समझ न मानव के आया
केवल पैसा ही था उसने पाया
सब कुछ था मैंने गंवाया
माँ–बाप, भाई बहन का प्यार
मेरा तो सब लुट गया जनाब
टूट गए मेरे काँच के ख्वाब

सब खुशियों को दिया था पोटली में बाँध
जो न रहा अब मेरे पास
वहाँ से आया यह बंजारा
जो चैन की बंसी बजाए
जो मेरे टूटे दिल को बिल्कुल ना भाए

जो बार–बार यह धुन बजाए
तेरा ठाठ पड़ा रह जाएगा
जब बाँध खुशियाँ बंजारा ले जाएगा

शिखा
बी.ए. (ऑनर्स)
अंग्रेजी, तृतीय वर्ष

होड़ लगा तू उस तेज पवन से....

होड़ लगा तू उस तेज पवन से,
रफ्तार जान मन की, मन से।
जैसे पवन उड़ा ले जाता भूमि की धूल,
उसी तरह तू उड़ा धरती से तम के मूल।

तू नदियों की बहती धारा बन जा
भेदभाव नहीं है जहाँ तू उस संगम तक जा।
तब तू जान लेगा, परख लेगा अपने छोटेपन को,
देखकर तू सहस्त्रों नदियों के अपनेपन को।

तू कुछ तो उस झुके हुए वृक्ष से सीख,
आश्रय एवं फल देते जीवों को बिन माँगे भीख।
हर पल बरगद बनने की रख कोशिश न की खजूर,
सफलता एवं ख्याति तेरे पग चूमेगी जरूर।

तू बहुत बड़ा हो गया है पर सूर्य तो नहीं,
बहुत शक्तिशाली हो गया है, पर रावण तो नहीं।
विशाल अभियान है पर चाँद से ज्यादा नहीं,
ग्रहण लगा है सबों पर, तू तो दो पैर का प्यादा ही।

बहुत जी चुका स्वयं के लिए अब कुछ पुण्य कमा,
कुरीति रुपी जगत में सत्कर्मों का दीपक जला।
पर्वत नगराज को देखकर कपोल न फूला,
उसकी छाती फाड़ आगे बढ़ और दे उसे रूला।

भ्रष्ट आचरण छोड़ और यथार्थ को पहचान,
धन से कुछ नहीं, यही बढ़ाएगा यश और मान।
टीले को देखकर, मुँह छिपाकर रास्ता न बदल
ठोकर मार हटा दे, यही राह बनेगा सबका कल।

होड़ लगा तू उस तेज पवन से,
रफ्तार जान मन की, मन से।

सौरभ सुमन
बी.ए. (ऑनर्स)–इतिहास
तृतीय वर्ष

हिन्दी हमारी शान है

हिन्दी हमारी आन है
हिन्दी हमारी शान है
हम क्यों भुलाएँ इसे यही हमारी पहचान है
भाषाएँ विश्व में यूँ तो अनेक हैं
पर राष्ट्रभाषा को महत्व विशेष है
सम्पूर्ण देश में समझी जाने वाली यह हिन्दी है
विलीन कर हर भाषा को अपनाने वाली हिन्दी है
सम्मानित हो भी क्यों नहीं यह सर्वगुण सम्पन्न हिन्दी है
माता है इसकी संस्कृत तभी तो यह परिपूर्ण है
राष्ट्र भाषा हिन्दी पर हम सब को अभिमान है
बढ़ती रहे, फलती रहे, यही सरस्वती का वरदान है
हिन्दी हमारी आन है
हिन्दी हमारी शान है।

नेहा शर्मा
बी.ए. हिन्दी (ऑनर्स), द्वितीय वर्ष

मिट्टी बुलाती है..

वो पीपल की छांव और नदियाँ लोरी सुनाती हैं
चले आओं ना लल्ला गाँव की मिट्टी बुलाती है।

वो पेड़ महुआ के उन पर गाती हुई कोयल
बोलो शहर में क्या तुम्हें वो याद आती हैं।

यहाँ हर रोज कुँए पे रौनक सी होती है
कुछ लड़कियाँ अब भी यहाँ पायल बजाती हैं।

सुकूँ दिखता है हँसी होती है हर एक चेहरे पर
जब जंगल से हर शाम गाएँ घर लौट आतीं हैं।

पिज़्जा बर्गर क्या है ना किसी को पता यहाँ
माएँ आज भी बच्चों को यहाँ दूध रोटी खिलातीं हैं।

दुनिया में भले ही बिछ गए हो ये जाल सड़कों के
एक कच्ची सड़क आज भी तुम्हारे घर को जाती है।

सचिन कुमार
बी.ए. (हिन्दी), तृतीय वर्ष

याद है वह कथा

याद है! वह कथा
जिसकी दुख भरी व्यथा।
पापा की वह रानी,
आज सोलह दिसम्बर की कहानी।
दानवों ने किया उसके साथ अत्याचार,
समाज में जन–जन को किया शर्मसार।
याद है! वह ठण्डी रात,
जिसमें भय को हरा वह बनी निर्भया।
उसके दुखों का ना था कोई पैमाना,
सड़क पर उसे मूक दर्शक बना
देखता रहा ज़माना।
माँगी संसार ने उसकी जिगंदी की दुआ,
मगर कुछ ना हुआ।
ज्योति बुझ गई
पापा की रानी सो गई।
दानवों को ना मिला फाँसी का फंदा,
तो क्या फिर होगी दामिनी पैदा।
क्या अब रह पाएगी इंसानियत धरा पर जिंदा
दामिनी को यू ना भुलाइए,
उस ज्योति की मशाल दोबारा जलाइए।
क्योंकि सभी को याद है
याद है! वह कथा।

लक्ष्मी तोमर
हिन्दी (विशेष)
द्वितीय वर्ष

महिला सशक्तिकरण

कभी–कभी मन में यह विचार आता है कि
लड़कियों को लड़कों से कम क्यूँ समझा जाता है
लडकों को वंश का रूप समझा जाता है तो
लड़कियों को बोझ क्यों समझा जाता है

लड़कों का पढ़ना–लिखना सही समझा जाता है तो
लड़कियों का पढ़ना–लिखना गलत क्यों समझा जाता है
लड़कों के पैदा होने पर खुशी मनायी जाती है तो
लड़कियों के पैदा होने पर शोक क्यों मनाया जाता है
लड़कियों को बाहर निकलने से रोका जाता है तो
लड़कों को घर से बाहर निकलते समय उन्हें मर्यादा
में रहना क्यों नहीं सिखाया जाता है

हैरान हूँ, दुखी हूँ, इस आज़ाद देश में इस छोटी
सोच को बढ़ावा क्यों दिया जाता है
अब ज़रूरत है इस पुरानी सोच को बदलने की
अब ज़रूरत है महिलाओं को सशक्त बनाने की
अब हर किसी को जगाना होगा, और सबको जगाना होगा
बहुत खो लिया नारी ने, अब उसे उसका हक दिलाना होगा

स्त्रियों को खुद, स्वयं को आगे बढ़ाना होगा,
स्त्रियों को खुद, इसकी शुरुआत करनी होगी
उम्मीद है जल्द ही हालात बदलेंगे
उम्मीद है अब वक्त करवट लेगा
और नहीं रहेगी किसी स्त्री के चेहरे पर शिकन।

बबीता
बी.ए. (ऑनर्स), हिन्दी
द्वितीय वर्ष

कुंदन

बात वही, काली रात वही
सदियों से चलती आ रही
वक्त की बिसात वही
ना कुछ बदला है, ना कुछ बदलेगा
यदि निखरना है, कुंदन तो वह जलेगा

जलना होगा उसे, तपना होगा उसे
सहकर वक्त के थपेड़े, फिर
फिर संभलना होगा उसे।
निखरने की कसौटी है वही,
जलना तपना फिर सभंलना
जो पार यह सब कर जाएगा
तो फिर वही कुन्दन कहलायेगा

जीना रेत से ही सोना
हो जाने की कहानी है,
जो इतना आसान कहाँ?
बिन संघर्ष जीवन में, ऐसा मुकाम कहाँ?
ये सबके वश का, काम कहाँ?

ये जमाना दुत् करेगा
हर पग पर धिक्कारेगा
क्षमताओं पर प्रश्न चिन्ह लगेंगे
शब्दों के तीक्ष्ण बाण चलेंगे
दर्द भी सब पैमानों से पार होगा
छल होगा, कपट होगा,
भाग्य भी बड़ा विकट होगा
लेकिन... आगे तब भी बढ़ना होगा
यूँ ही हमको तपना होगा।

क्योंकि रेत ही होता है, है सोना
धुलकर, छनकर, घिसकर,
ना जाने कितना तपकर
जब रेत के सारे दोष दूर हो जाते हैं
तो फिर उसी आग में जलकर
मिट्टी में ही, सोने के गुण
सारे आ जाते हैं।

गिरकर उठना, उठकर चलना
चलते–चलते थक कर फिर गिर जाना
हर ठोकर के बाद संभलना
बस, ये ही जीवन भर चलता है
जीवन यूँ ही आगे बढ़ता है।

कभी तेज कभी धीरे बढ़ना
बिन मुडे, बस आगे चलना
बिन रूके, यूँ ही तपकर
फिर तेज सलोना सजता है
धीरे–धीरे, फिर माटी से
यूँ ही कुंदन बनता है।

बिन रूके बस, चलते जाना
अपने ही पथ पर, बढ़ते जाना
तपकर, घिसकर, सहकर
ही तो तेज बिखरता है
जिसके आगे फिर,
दुनिया का हर मस्तक झुकता है।

ये सहकर भी जो बचता
फिर वो कुंदन होता है।

अरूण कुमार
राजनीति विज्ञान (विशेष)
द्वितीय वर्ष

दर्द एक एहसास

मन में पहले ही था,
दर्द का तुफान उठा,
जो कभी न था थम पाया,
जमाने ने था मुझे सताया,
सुना जब तुमको पहली बार
मन में जागे अनेको विचार
चलो कोई तो है, जिसे
दर्द में था अपने साथ पाया।
भले ही वजह अलग है,
सोच अलग है, अलग है,
देखने का नज़रिया
परन्तु इस दर्द और जख्म का,
एक ही था दरिया।
जिंदगी एक आग का दरिया
और उसमें तैरकर आगे जाना है।
चलना है पवन के जैसा, और
आँधी बनकर दुष्टों को उड़ाना है।
चलते जाना है...।
चलती का नाम गाड़ी,
जो न चले वो बने सवारी
जिसे मंजिल पर जाना है
कठिनाईयों से नहीं घबराना है।
अगर जिंदगी एक आग है,
तो समाज भी है लोहा,
कहता है मशहूर लोहार,
जब लोहा गर्म हो जाए
तब ही करना चाहिए वार
नहीं तो थोड़ा सा करना चाहिए इंतज़ार।
नहीं है यह मेरा कहना
कि हमेशा खामोश तू रहना
मेरा है तुझसे ये कहना
समय के इस रूख में न बहना।
पहले समाज की कमजोरी को लो जान
उस कमजोरी पर करो प्रहार
और समाज निखर जाएगा
तब सफलता को तू पाएगा।
मन में रखना दृढ़ विश्वास
बुझने न देना ये प्यास
दर्द का मुझको भी है एहसास
इसलिए कोई हो या न हो, मैं हूँ हमेशा तेरे साथ।

शिखा
अंग्रेजी (ऑनर्स), तृतीय वर्ष

गाँव

बचपन में जब भी मैं बाबूजी के साथ अपने गाँव जाता तो मरैया चाचा हो, वंशी दादा, झगरूआ की माई हो या फिर बैलगाड़ी वाले बाबा सब बहुत दुलार करते थे। कोई मकई का लावा खिलाता तो कोई धान की खोई दूध दही नहीं खाने पर डाटते भी थे सभी लोग। याद है मुझे पौष, माघ, फागुन में लहलहाते गेहूँ और सरसों के वे खेत जिनकी क्यारियों के बीच छुपमछुपाई का खेल खेलता गाँव के बच्चों के साथ वैशाख और जेष्ठ की तेज दुपहरी में गाँव के सभी बच्चे और बूढ़े इक्कठा होते आम की गहवारी में। बड़ा मजा आता हमें आम की गहवारी में कबड्डी और गुल्ली डण्डा खेलते। खेल–खेल में लड़ भी जाते एक दूसरे से। याद है मुझे एक बार खेल–खेल में मार दिया था मैंने गाँव के एक बच्चे को तब बहुत मार पड़ी माँ के हाथो, बहुत डांटा था बाबूजी ने मुझे आज कई वर्ष बाद गाँव जाना हुआ वहां पहुंचने पर ऐसा लगा मानों की अपरिचित जगह आ गया हूँ गाँव अब गाँव नहीं था न मरैया चाचा थे न वंशी दादा और न ही बैलगाड़ी वाले बाबा ही।

कोई परिचित चेहरा नहीं था सब लोग खो गए थे कहीं एक–एक करके और जो थे वो नहीं पहचानते थे मुझे। आम की गहवारी भी उजड़ चुकी थी और खड़ा हो गया था वहां कंक्रीट का एक मकान अब कुछ भी परिचित नहीं बचा सब परिचित चेहरे तब्दील हो चुके थे अपरिचित चेहरों में। पूरे गाँव में बचा था तो सिर्फ एक टूटा–फूटा परिचित मिट्टी का वह पुराना घर जिसकी चौखट पर बैठ पंचानबे बरस की अर्द्धनंग बुढ़ी ''दुलरिया'' दादी अभी भी कर रही है इंतजार वर्षों से अपने परदेसी बेटों के घर लौटने का। गाँव! गाँव नहीं रहा, गाँव के घर अब तब्दील हो चुके हैं अपरिचित मकानों में। मुझे गाँव अपना बहुत याद आता है।

अंशुल पटेल
बी.ए. (ऑनर्स)
राजनीति विज्ञान, प्रथम वर्ष

नाम

नाम की क्या बात करें, साहब!
नाम तो खुद एक बात है
बात है नाम वालों की
बात है काम–काज की
बात है राज–राज की।

लड़ता है सैनिक सेना में
नाम देश का होता है।
वाह वाही! सत्ता की होती है,
26 जनवरी पर याद दिलाकर
तालियाँ खूब बटोरती।
यश गाता है गाने वाला
और मरता है मरने वाला
लेकिन, नाम जरूर होता है
शहजादों का किताबों में
और शहीदों का कब्रगाहों में।

नाम की ही तो बात है सारी
जब मस्जिद ढहा दी जाती है
और, मन्दिर की आस सुहाती है
राम–रहीम के नाम पर ही तो
लड़ता है लड़ने वाला
फिर दो से अठ्ठासी सीटों पर
इतराता है वो 'रथवाला'।

नाम ही तो परेशानी है सारी
जब 'राम' 'रंग हो जाता है
धर्मनिरपेक्षता का नाटक
जब सर चढ़कर मंडराता है।

ये नाम ही है भईया
जो हम वर्मा, शर्मा गोत्र हैं
जातिवाद के जंग में जकड़े
जीते हैं और मर जाते हैं।

नाम सड़क है, नाम गली है,
नाम ही तो है,
हर चौराहा
'औरंगजेब' बदलता है
जब याद 'कलाम' आ जाते हैं।

नाम–काम का अजीब संबंध है
नाम अच्छा तो काम भी अच्छा,
और काम बेकार, तो नाम बेकार।
ऐसा 'नामवाले' कह जाते हैं।

शिवम वर्मा
बी.ए. (आनर्स) इंग्लिश

बिटियाँ

बतला दो मुझको एक सवाल
संसार में आने से पहले ही,
क्यों? कर दिया मेरा अन्तिम संस्कार
क्या? मेरे जीवन का ना था कोई आधार।
मेरे अस्तिव को क्यो मिटा दिया,
बेटे की चाह में बेटी को भूला दिया।
जब तुमने यह जाना,
बेटी ने दरवाजा खटखटाया।
क्यों हुई माँ की आँखें नम।
मेरे आने का क्या? इतना था गम।
संसार में भर पाती किलकारी
बाबुल का प्यार पाती
जाने क्यों आज ऐसा लगा?
काश में होती बेटा।

लक्ष्मी तोमर
बी.ए. (हिन्दी) विशेष
द्वितीय वर्ष

हम विकसित हैं

हरे भरे मैदानों के ऊपर
दूर क्षितिज के छोर से,
उठती काली घटाओं पर,
सफेद बगुलों की रेखा,
देखना, कितना अच्छा लगता था।
अम्बर के माथे पर उगते–छिपते
सूरज का लाल टीका।
नीलम की अंगूठी में
सुनहरे पुखराज–सा जड़ा,
पूनम का चांद।
गुपचुप कानों में कुछ कहते
वो टिमटिमाते तारे देखना
कितना अच्छा लगता था।
पर अब इन गगनचुम्बी
इमारतों के बीच फैले
मुठ्ठी भर आसमान पर
ढूँढती हैं मेरी आंखे,
सूरज, चंदा, तारे, बदली।
हे! महानगरीय जीवन,
क्या दिया तुमने हमें?
अनजानापन, संवेदनहीनता, तन्हाई
क्या सभ्यताओं के विकसित
होने की यही शर्ते हैं?

अर्चना ठाकुर
बी.ए. हिन्दी (ऑनर्स)
द्वितीय वर्ष

जिंदगी

बनते बिगड़ते हालातों का हिसाब है जिंदगी
हर रोज एक नया पन्ना जुड़ता है जिसमें
वो एक किताब है जिंदगी।

किसी के लिए सरताज है जिंदगी
कभी दो वक्त की रोटी मोहताज है
कोई रो–रो कर निकाल रहा है
किसी के लिए बिंदास अंदाज है जिंदगी

खुशनुमा दौर चल रहा था जिंदगी का
कि मुसीबतों ने डेरा डाल सब कुछ हिला दिया
सबक अधूरा ही था अभी जिंदगी का और
इम्तिहानों के दौर ने जीना सिखा दिया।

जीत आसानी से मिले तो क्या जिंदगी,
कभी–कभी दुख भी सहना जिंदगी
हर रोज एक नया पन्ना जुड़ता है जिसमें
वो एक किताब है जिंदगी

आखिर में ये है कहना जिंदगी
कि हर वक्त यूँ जियो जिदगी कि लगे अलग
फिर मिले या ना मिले ये जिंदगी।

रीमा
बी.ए., हिन्दी (विशेष)
द्वितीय वर्ष

दोस्त की दोस्ती

एक दोस्त अपने दोस्त के शव को देखकर मुस्कुराया
तो एक बुजुर्ग ने कहा कि बेटा, जवान मौत पर मुस्कुराते नहीं
लड़के ने आँख साफ करते हुए कहा...
बाबा क्या बताऊँ दिल तो खून के आँसू रो रहा है..
लेकिन दोस्त से वादा किया था जब भी मिलेंगे.. हँसते हुए मिलेंगे...
मैं जब मर जाऊँ तो हँसते हुए आना यारों
क्योंकि उस वक्त मेरे हाथ तुम्हारे आँसू नहीं पोंछ सकेंगे।

चन्द लाइनें दोस्तों के नाम
क्यूँ मुश्किलों में साथ देते हैं ''दोस्त''
क्यूँ गम को बाँट लेते हैं ''दोस्त''
न रिश्ता खून का न रिवाज से बँधा है ''दोस्त''
फिर भी जिन्दगी भर साथ देते हैं ''दोस्त''
प्रेम से रहो दोस्तों जरा सी बात पे रूठा नहीं करते ''दोस्त''
पत्ते वही सुन्दर दिखते हैं जो शाख से टूटा नहीं करते।

रंजन लोबी
बी.ए. (आनर्स)
राजनीति विज्ञान

हिन्दुस्तान

यारों मैं जिस मिट्टी का हूँ, मेरी पहचान लिख देना,
कफन के कोने पर हिन्दुस्तान लिख देना।
बनी है जो किसी भी गुरुबत इसकी जान लेने को,
उस बन्दूक की गोली पर मेरी जान लिख देना।
वो मन्दिर हो या मस्जिद, गुरुद्वारा हो या गिरजाघर,
अगर चाहो तो मेरा नाम लिख देना।
सजाना है हमें यूँ एकता मंजिल की दीवार,
कहीं मैं राम लिख दूँ तो कहीं रहमान लिख देना।

नेहा शर्मा
बी.ए. हिन्दी (ऑनर्स)
द्वितीय वर्ष

जीवन की कविता

एक लम्बे अन्तराल के बाद
आज मैंने कलम उठाई
और लिख डाला एक 'शब्द'
पूरा किया एक 'वाक्य'
फिर भी अधूरी रह गई मेरी कविता
कभी–कभी कितना मुश्किल हो
जाता है एक भी 'शब्द'
लिखना और पूरा करना एक 'वाक्य'!
और, अधूरी रह जाती है कविता,
समय की चक्की में पिसते
जिंदगी की जद्दोजहद के बीच
जीवन और कविता के बीच
समय के ऊपर अपनी पैठ बना लेना
बड़ा ही साहसिक कार्य है...
बशर्ते यह कि कहीं कुछ छूट न जाए
और पूरी हो सके कविता
और कविता के साथ जीवन
बहरहाल अधूरी है
जीवन की कविता
और बड़ा ही दुष्कर कार्य है
जीवन की अधूरी कविता को पूरा करना।

जिंदगी हर मोड़ पर मोड़ बनकर मुड़ जाती है
और यही मोड़ हमें अन्तिम मोड़ तक पहुँचाती है
जिंदगी की पहचान जिंदगी में होती है
और यही जिंदगी, जिंदगी बदलकर रख देती है।

अंशुल पटेल
बी.ए. (आनर्स)
राजनीति विज्ञान

आपका विकास! सबका विनाश

आजकल हम केवल भारतीय नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व, जिसे देखो वो विकास की ओर भाग रहा है। चारों तरफ केवल और केवल एक ही शब्द गूँज रहा है और वह है, क्या.....विकास और फिर चाहे इस 'विकास' के लिए किसी को उसके अपने घर से खदेड़ दिया जाए। उनका हक छीन लिया जाए या फिर किसी के पेट पर लात मारी जाए, किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। उन्हें चाहिए बस–'विकास' अरे साहब! आपके यहाँ लाखों लोग रात में भूखे सोते हैं। लाखों लोग सड़कों पर सोते हैं। झुग्गी झोपड़ियों में रहते हैं और आप विकास की बात करते हैं। ये बात थोड़ा हज़म नहीं होती।

कई लोगों को आप रोज़ाना फुटपाथ पर मकोड़ों की तरह कुचल देते हो। आपको उससे क्या, आपको तो बस 'विकास' चाहिए। चाहे फिर प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करनी पड़े। आज विकास के नाम पर रोजाना लाखों पेड़ काटे जा रहे हैं और सरकार द्वारा वापस योजनाओं के नाम पर लगते कितने हैं और जीवित कितने रह पाते हैं, सब जानते हैं।

प्रति वर्ष पृथ्वी का तापमान बढ़ता जा रहा है। गंगा–यमुना, नर्मदा जैसी नदियाँ मात्र जहर के नाले बनकर रह गईं हैं। आज इनमें स्नान करने से पापों का तो कुछ पता नहीं नष्ट होंगे या नहीं, परन्तु इतना जरूर पता है कि आप फिर सालों तक बिस्तर से उठने वाले नहीं, परन्तु आपको इससे क्या, आपको तो 'विकास' चाहिए।

आज ओजोन परत क्षीण हो गयी हैं, बड़ी–बड़ी तेल रिफाइनरी धुएं का उत्पादन करने में लगी पड़ी हैं। जलवायु परिवर्तन हो रहा है और इस सबके बावजूद अमेरिका में बैठे साहब! आँखें मूंदकर बैठे हैं कि मानों कुछ भी नहीं हो रहा है और मानने को तैयार ही नहीं हैं।

अरे चलिए छोड़िए। हमारे यहाँ को ही ले लीजिए हमारी सरकार भी दो सालों से यमुना को शुद्ध करने पर लगी पड़ी है और इतनी आगे तक पहुँच चुकी है कि आप इस बात से अंदाज़ा लगा सकते हैं कि अब तक यमुना प्रदूषण नियंत्रण समिति का गठन ही हो गया है और मैं समझता हूँ शायद अगले 5–6 साल बाद ये कमेटी अपना काम करना भी प्रारंभ कर देगी। आज प्रकृति के साथ धड़ल्ले से खिलवाड़ हो रहा है। रिलायंस तेल रिफाइनरी और अन्य बड़े–बड़े साहबों की कम्पनियां लगातार पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रही हैं और हमारे नेता/सरकार एवं टीआरपी प्रिय चैनल 'विकास' की चादर ओढ़कर सोए हुए हैं। दिन रात एक माँग करते रहते हैं..... 'विकास' और मेरे यही बात समझ में आती है कि 'आपका विकास सबका विनाश'।

रजत सैनी
बी.ए. (आनर्स), राजनीति विज्ञान

मातृभूमि वंदना

मेरी मातृभूमि को मेरा वंदन है, उसकी मिट्टी महकता चंदन है।
खेल–खेल जिसकी गोदी के पालने में, रहा झूलता, पला, पैर पर खड़ा हुआ है।

जिसके आसमान के नीले आँचल की, शीतल छाया में मैं इतना बड़ा हुआ।
जिसने मेरे लिए सहा सब, कहा न कुछ, सौ–सौ बार उसे मेरा अभिनन्दन है।

हैं दुनिया में देश बहुत सुन्दर–सुन्दर, लेकिन मेरी मातृभूमि की शोभा न्यारी है।
स्वर्ग लोक की सुन्दरता, सुषमा, गरिमा, एक–एक कर उसके सम्मुख हारी है।

हम सबकी आशाओं, अभिलाषाओं की कल्पना वह, कल्पवृक्ष, नंदन–वन है।
मेरी मातृभूमि को मेरा वंदन है, उसकी मिट्टी महकता चंदन है।

नेहा शर्मा,
बी.ए. हिन्दी (आनर्स), द्वितीय वर्ष

नई विश्व व्यवस्था की संभावना

अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव के अंतिम दौर में यह लगभग माना जाने लगा था कि डोनाल्ड ट्रंप अमेरिका के राष्ट्रपति बनेंगे, लेकिन यह किसी को अंदाजा नहीं था कि वह पहले दिन से ही अपने चुनावी वादों को पूरा करने में जुट जाएंगे। वह ऐसा करते हुए दिख रहे हैं और इसीलिए उनके आलोचक कुछ ज्यादा ही चिंतित नज़र आ रहे हैं न केवल अमेरिका के भविष्य को लेकर बल्कि दुनिया की भावी दशा–दिशा को लेकर भी। ध्यान रहे कि दुनिया में बुनियादी बदलाव की पहली ठोस शुरूआत लगभग सौ साल पहले प्रथम विश्व युद्ध के बाद हुई थी जो बीस साल बाद द्वितीय विश्व युद्ध के समापन के साथ पूरी हुई।

पिछले सत्तर साल से लगभग वही मूल व्यवस्था थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ काम कर रही थी। बीते कुछ महीनों के अंदर घटी तीन घटनाओं ने उसे फिर से एक नए बदलाव की दहलीज़ पर लाकर खड़ा कर दिया है।

पहली घटना ब्रेक्जिट की है। ब्रिटेन द्वारा यूरोपीय संघ से अलग होने के जनमत पर इस संघ के अध्यक्ष ने कहा था कि यह सिर्फ यूरोपीय संघ के अंत की शुरूआत नहीं है बल्कि पश्चिमी सभ्यता के अंत की भी शुरूआत है।

दूसरी घटना इटली की थी। हालाँकि उसे कम महत्व दिया गया है। इटली ने अपने युवा प्रधानमंत्री के संविधान संशोधन प्रस्ताव जनमत संग्रह के द्वारा ठुकरा कर एक प्रकार से यूरोपीय संघ की आशंका पर मुहर लगा दी है। यह माना जा रहा है कि इटली यूरोपीय संघ से अलग होने वाला दूसरा यूरोपीय देश होगा।

तीसरी घटना अमेरिका में घटी और यह गैर पारम्परिक नेता डोनाल्ड ट्रंप की जीत के तौर पर सामने आई। दुनिया की उम्मीदों के विपरीत राष्ट्रपति पद के लिए ट्रंप जीते। कहा जाता है कि खुद ट्रंप को अपनी जीत की उम्मीद नहीं थी। क्या दो महाद्वीपों के तीन देशों में घटी इन तीन घटनाओं में कोई समानता है और क्या ये एक नए विश्व के आकार लेने की आहट दे रही है। इन तीनों घटनाओं की दो बातें बेहद चौकाने वाली हैं।

पहली और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि इन्होंने अब तक की परम्परागत बौद्धिक मान्यताओं एवं अनुमानों को बुरी तरह झुठला दिया। इन्होंने मध्यम एवं उच्च वर्गों के हितों एवं विचारों पर आधारित व्यवस्था को दरकिनार करके एक नई व्यवस्था के प्रति अपनी आकांक्षा व्यक्त की है। भले ही इस नई व्यवस्था की व्याख्या दक्षिणपंथी राजनैतिक दर्शन के संदर्भ में की जाए। निःसन्देह इसके केन्द्र में रोजगार विहीनता की स्थिति प्रधान रूप से रही है। अमेरिका में 1980 से लेकर 2013 तक मध्यम वर्ग का आकार काफी छोटा हुआ। इस दौरान कॉलेज की डिग्री से रहित लोगों की आय में भारी गिरावट आई। यह बात गौर करने की है कि बड़बोले अथवा बदमिज़ाज कहे जाने वाले ट्रंप को उन क्षेत्रों में ही सबसे ज्यादा वोट मिले जहाँ पिछले 10 सालों से चीनी सामानों का आयात सबसे अधिक बढ़ा है। ट्रंप की इस बात ने लोगों को आकर्षित किया कि विश्व के इतिहास में नौकरियों की इतनी बड़ी चोरी कहीं नहीं हुई है, जितनी अमेरिका के साथ हो रही है।

यूरोप भी इस आर्थिक संकट से ग्रस्त है। इसे एक प्रकार से विश्व आर्थिक ग्राम के विरूद्ध व्यक्त तीव्र एवं स्पष्ट आक्रोश की अभिव्यक्ति मान सकते हैं। तो क्या यह माना जाए कि आर्थिक उदारीकरण की सांस फूलनी शुरू हो गई है? न मानने का कोई कारण नज़र नहीं आ रहा है। जब यूरोप के देश ही अपनी एकता को नहीं संभाल पा रहे हैं तो दुनिया कैसे संभालेगी। वैसे भी ट्रंप का अमेरिका जब चीन से सस्ते सामान और भारत से सस्ती सेवाओं पर प्रतिबंध लगाने की सोचेंगे तो अन्य देश भी अपनी नीतियों में बदलाव लाने को मजबूर होंगे।

दूसरा महत्वपूर्ण तथ्य है जनमत। ये तीनों निर्णय जन प्रतिनिधियों के निर्णय नहीं हैं बल्कि सीधे–सीधे जनता के निर्णय हैं। इसलिए इनका न केवल महत्व बढ़ जाता है बल्कि उस पर पुनः विचार करने की संभावना भी खत्म हो जाती है। दुनिया के राजनीतिक परिदृश्य पर अन्य जो दो बहुत बड़े बदलाव संभावित नज़र आ रहे हैं उनमें एक है बचे खुचे शीतयुद्ध की समाप्ति तथा दूसरा है आतंकवाद के खिलाफ सामूहिक जंग का होना। इन दोनों का श्रेय ट्रंप को मिल सकता है। ट्रंप ने साफ–साफ कहा है कि वह रूस के साथ अच्छे संबंध बनाना चाहता है। सूचनाओं के अनुसार रूस ने ट्रंप को चुनाव में मदद भी की थी। अपनी इस बात की तस्दीक ट्रंप ने यह कहकर कर दी है कि फिलहाल

दुनिया को सबसे बड़ा खतरा इस्लामिक स्टेट से है। इसके खात्मे के लिए वह पुतिन के साथ एक अस्थायी गठजोड़ बना सकते हैं।

ऐसा माना जाता है कि सीरिया के मामले में अमेरिका और रूस एक दूसरे के विरूद्ध हैं, जिसका फायदा आईएसआईएस को मिल रहा है। निश्चित रूप से इस नीति से जहाँ विश्व आतंकवाद की कमर टूटेगी, वहीं अमेरिका की विश्व की अगुवाई करने वाले देश की छवि पर भी असर पड़ेगा। वैसे भी दुनिया के राजनीतिक नक्शे पर जिस प्रकार से नए–नए खिलाड़ियों का उदय हो रहा है, इस पृष्ठभूमि में तकनीकी और आर्थिक सहायता देकर विश्व की गारंटी देने वाला राष्ट्र बनने की अवघटना अव्यावहारिक लगने लगी है। यह बात ओबामा को भी समझ में आने लगी थी, जिसे ट्रंप अंजाम तक पहुँचा देंगे। ऐसा लगता है नाटो में भी एक प्रकार की बेचैनी व्यक्त हो गई है। इसके लिए अमेरिका अपनी जीडीपी का 3.61 प्रतिशत खर्च देता है, जो एक बड़ी रकम है। यूरोप के केवल चार अन्य देश अपनी जीडीपी का दो–दो प्रतिशत देते हैं। शेष सदस्य राष्ट्रों ने अपना योगदान बंद कर दिया है। जिस प्रकार ट्रंप ने अपनी नाखुशी जाहिर की है। जाहिर है कि रूस से दोस्ती सध जाने के बाद नाटो की उतनी जरूरत भी नहीं रह जाएगी। वार्सा संधि खत्म हो ही गई है। ऐसा होने पर विश्व सैन्य स्थिति में एक बड़ा परिवर्तन आएगा। उसको लेकर दो संभावनाएं व्यक्त की जा सकती है। पहली बात यह है कि चीन के सामान एवं सेवाओं के आयात पर अमेरिका द्वारा प्रतिबंध लगाए जाने से इन दोनों महाशक्तियों के बीच एक व्यापारिक जंग छिड़ सकती है, जो दुनिया के लिए अच्छी नहीं होगी। दूसरी बात यह है कि अमेरिका द्वारा अपनी विश्व भूमिका को कम करने पर जो अनिश्चितता उत्पन्न होगी, उसका फायदा उठाने के लिए चीन आगे आ सकता है। ट्रंप द्वारा संकेत देने पर चीन द्वारा व्यक्त की गई प्रतिक्रिया यही बताती है, लेकिन चीन का उभार विश्व के लिए शुभ नहीं कहा जा सकता है। भारत के लिए शुभ होने का सवाल ही नहीं उठता।

अंशुल पटेल
बी.ए. (आनर्स)
राजनीति विज्ञान

माँ

माँ हमारे लिए एक मॉरल शब्द है, क्योंकि हम उसके साथ मॉरल जोड़ देते हैं। जिस माँ के बारे में आप फेसबुक पर लिख रहे होते हैं वो आपको पैदा करने वाली, आपसे प्रेम करने वाली, आपके लिए त्याग करने वाली माँ होती है। क्या आप उस माँ के बारे में बाखुशी लिख सकते हैं जो अपनी मर्ज़ी से माँ नहीं बनी या जो शादी से पहले प्रेगनेंट हुई? जिसने अबॉर्शन कराया? जो रेप की वजह से माँ बनी? जो कुछ दरिंदों के कारण आज घुट–घुट कर जीने को मजबूर है या उनकी जो कुछ दोष न होने पर भी समाज के ताने सहने पर मजबूर हैं या फिर उसकी जिसने अपना बच्चा पैदा कर केवल ये सोचकर अनाथालय में छोड़ दिया कि कहीं समाज इसे मेरी तरह ही कलंक कह–कह कर मार ना दे या जिसे दो देशों में युद्ध के समय दुश्मनों ने गैंगरेप कर माँ बना दिया? सोशल मीडिया पर माँ के साथ तस्वीर लगा कर आपका मॉरल लेवल ऊँचा हो जाता है। माँ जितनी बूढ़ी, मॉरल लेवल उतना ज्यादा। फिर अगर नेता या देश के प्रधानमंत्री हैं तो बात ही क्या हो। लोग कहेंगे, देखो इतना व्यस्त होते हुए भी माँ के लिए समय निकाल लेता है।

जब हम औरतों को पढ़ाने की बात करते हैं तो ये तर्क देते हैं कि पढ़ी–लिखी लड़की एक बेहतर माँ बनेगी। अपने बच्चों को पढ़ाएगी और देश की सेवा के लिए बेहतर बच्चे जन्मेगी। जब हम एक लड़के की पढ़ने की बात करते हैं तो क्या आप कहते हैं कि वो बेहतर बाप बनेगा?

साहब आपके यहाँ क्यों घड़ी की सुइयाँ एक लड़की का चरित्र तय करती हैं? मैं समझता हूँ और कम से कम मुझे तो धिक्कार है ऐसे समाज और इतनी घटिया मानसिकता और सोच के लोगों पर.... जनाब। जिस मान रूपी चाय की आप दुहाई दे रहे हैं... डूबकर मर जाइए उस चाय के कप में ही... अगर आप अपना नजरिया नहीं बदलने जा रहे हैं तो।

रजत सैनी
बी.ए. (आनर्स)
राजनीति विज्ञान

तेजाब की तपिश

'अमर उजाला', और 'राजस्थान पत्रिका' में एक दशक तक संसदीय और राजनीतिक मुद्दों की रिपोर्टिंग करने वाली पत्रकार 'प्रतिभा ज्योति' की लिखी हुई पुस्तक 'एसिड वाली लड़की' पर 'इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में परिचर्चा की गयी। इसी मौके पर रामलाल आनंद कालेज की छात्रा श्रेया उत्तम ने प्रतिभा ज्योति से बातचीत की। पेश है बातचीत के प्रमुख अंश....

प्रश्नः एसिड अटैक ने आपको क्यों इतना प्रभावित किया कि आपने उस पर एक किताब लिख डाली। एसिड अटैक जैसे विषय पर किताब लिखने का विचार कब आया?

उत्तरः पत्रकारिता के सोलह साल के कैरियर में मैंने एसिड अटैक की बहुत सी घटनाओं की रिपोर्टिंग की है और जैसे कि मैं उनसे मिलती थी तो अटैक की शिकार हुई लड़कियाँ बताती हैं कि मीडिया केवल तब उनके पास आता है जब हम अपना दर्द किसी कॉन्फ्रेन्स में या धरने में बयाँ करते हैं और मीडिया उस अटैक को बस ब्रेकिंग न्यूज की तरह दिखाता है। एसिड अटैक के बाद हमारी जिंदगी कैसी होती है, हमारे अंदर के दर्द को जानने की कोई कोशिश नहीं करता है। इसलिए मैंने सोचा कि इन भयानक हो रही घटनाओं पर सबका ध्यान जाना चाहिए।

प्रश्नः आपकी किताब का शीर्षक 'एसिड वाली लड़की' ही क्यों है?

उत्तरः इस विषय पर लिखने के लिए मैं चार पाँच साल से परिकल्पना बना रही थी, लेकिन शीर्षक नहीं सोचा था मैंने। जब एसिड अटैक की शिकार हुई लड़की सोनाली से मिली, जो कि झारखण्ड के बोकारों से है। वो अपना इलाज कराने दिल्ली आती थी तो मेरी उससे मुलाकात छतरपुर में हुई। मैंने उसका पता लिया और जब उस पते पर पहुंची तो वहाँ पर आसपास के लोग सोनाली नाम की किसी लड़की को नहीं जानते थे। बहुत दिनों तक चक्कर लगाने के बाद एक परचून के दुकानदार से जब सोनाली के बारे में पूछा तो तपाक से कहा–''अरे! वो एसिड वाली लड़की' और मुझे वहीं से शीर्षक मिल गया।

प्रश्नः वजह क्या होती है एसिड अटैक करने की?

उत्तरः हमारे देश में नब्बे प्रतिशत लड़कियों पर एसिड अटैक इसलिए होते हैं क्योंकि वो किसी लड़के को पसंद आती हैं और लड़की उसके प्रेम निवेदन को ठुकरा देती है। हम ना नहीं सुनना चाहते हैं। फिर लड़के के अंदर प्रतिशोध की भावना आती है कि मैं इसको सबक सिखाऊँगा। जमीन जायदाद के झगड़ों के मामलों में भी एसिड अटैक की खबरें आती रहती हैं। आज के समय में बात–बात पर एसिड फेंकना आम बात हो गयी है। वो ये समझने को तैयार नहीं हैं कि अटैक के बाद केवल उस लड़की का चेहरा नहीं झुलसता बल्कि उसकी आत्मा झुलसती है और इस दर्द को बयाँ नहीं किया जा सकता है। उन लड़कियों से बात करने पर बस वो एक बात कहती हैं कि काश! मैं उस जगह पर नहीं होती।

प्रश्नः इस तरह की घटनाओं का जिम्मेदार क्या आप परवरिश को नहीं मानती हैं?

उत्तरः हाँ बिल्कुल, परवरिश जिम्मेदार है इसमें। हम बच्चों को दूसरों की भावनाओं का सम्मान करना नहीं सिखाते हैं। अगर किसी ने ना कह दिया तो क्या हुआ, आगे बढ़ो। किसी से बदला लेने की नहीं सोचना चाहिए। एसिड अटैक एक ऐसा हथियार है जिसको चलाने में ना आवाज़ आती है न ही उसको खरीदने के लिए आपको लाइसेंस लेने की जरूरत होती है और आसानी से 20 रुपये में इसकी बोतल उपलब्ध होती है दुकानों में। सुप्रीम कोर्ट कहता है कि एसिड की बोतल खरीदने के लिए आपको आधार कार्ड, पैन कार्ड दिखाना होगा। लेकिन हमारे देश में इसका अनुसरण करने का कोई नियम नहीं है। इसलिए अभिभावकों को जागरूक होना होगा और बच्चों की भावनाओं को समझकर उनको इस तरह के कुकृत्यों को करने से रोकना होगा।

प्रश्नः एसिड अटैक करने वाले आरोपियों को कितने समय में सजा मिलती है?

उत्तरः 1000 केस हमारे देश में हर साल होते हैं। 2013 में हुए निर्भया कांड से पहले तक एसिड अटैक जैसे मामले को कोई जानता भी नहीं था। कोई अपराधी नहीं था सरकार की नजर में। वो तो 2013 के बाद महिलाओं की सुरक्षा के लिए अनेक कानून बने। अब अपराधी को कम से कम 10 साल की कैद तथा अधिक से अधिक उम्रकैद है।

प्रश्नः एसिड अटैक करने वाले लोग होते कौन हैं, क्या ऐसे काम सिर्फ वो करते हैं जो कम पढ़े लिखे हैं?

उत्तरः ऐसा नहीं है कि सिर्फ कम पढ़े लिखे नवयुवक ऐसा करते हैं। अभी कुछ दिनों पहले निफ्ट जैसे संस्थान में पढ़ने वाले लड़के ने अटैक किया था। हमें जरूरत है कि युवाओं को ऐसे भयावह कार्य न करने के लिए शिक्षित करें। उनको ''ना'' सुनना सिखायें अगर वो लड़की नहीं चाहती तो आप उस पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं डाल सकते हैं।

प्रश्नः अगर किसी लड़की के सामने प्रेम प्रस्ताव आता है और वह उस प्रस्ताव पर रूचि नहीं लेती है। ऐसे वक्त पर लड़की को क्या करना चाहिए, क्योंकि लड़की को नहीं पता होता कि उसके इनकार के बदले आगे उसके साथ एसिड अटैक या बलात्कार जैसी कोई भी घटना हो सकती है?

उत्तरः लड़की को चाहिए कि वो उस लड़के को समझाए आप जो सोच रहे हैं वो अच्छा है। आपके अनुसार अच्छा हो सकता है, लेकिन ऐसा सम्भव नहीं हो सकता है।

प्रश्नः क्या हमारे देश में ऐसा होता है या विदेशों में भी ऐसी घटनाएं होती हैं?

उत्तरः हर जगह एसिड अटैक जैसी घटनाएं होती हैं। अभी कुछ दिनों पहले जर्मनी में एक ऐसी ही घटना हुई थी। वहाँ पर इस घटना को लेकर पूरे देश में आन्दोलन खड़ा हो गया था। मीडिया ने पूरा साथ दिया था तथा देश की जनता ने वहाँ की संसद में दवाब डालना शुरू कर दिया था कि हमारे यहाँ एसिड अटैक जैसी घटनाएं कैसे और क्यों हो रही हैं?

श्रेया उत्तम
बी.जे.एम.सी.
प्रथम वर्ष

एक वादाः इस वेलेंटाइन

वादा करो कि चेहरे और जिस्म पर एसिड नहीं फेंकोगे। जिस चेहरे से प्रेम हुआ उसी को कुरूप करने का जश्न नहीं मनाओगे। वादा करो कि बलात्कार नहीं करोगे। बलात्कार को अपनी जीत नहीं मानोगे। बलात्कार तुम्हें मर्द साबित करता है–इस भ्रम को त्याग दोगे। वादा करो कि असफल प्रेम के बाद फिरौती में सेक्स नहीं मांगोगे। प्रेम को धंधा नहीं बनाओगे। वो वाहियात प्रेम न करोगे कि तुम्हारे प्रेम में पड़ने के बाद कोई स्त्री प्रेम के नाम पर थूकने लगे। वादा करो कि सब टूट जाने के बावजूद चरित्र हनन नहीं करोगे। निजी तस्वीरें और संवाद आम करके खुद को नामर्द घोषित न करोगे। वादा करो कि जो रास्ते अलग हो गए तो इतने कमजोर न पड़ोगे कि जीवन का अंत कर लो। जो जीवन था इसलिए मिले थे और जो जीवन रहा तो कुछ ज्यादा बेहतर मिलने का इंतजार कर रहा होगा।

वादा करो कि जो नंबर तुम्हें पूरे भरोसे से दिया था उसे ट्रेन, प्लेटफार्म, सार्वजनिक शौचालयों की दीवारों पर न लिखोगे। जिसका नंबर तुमने लिखा वो तो अंजान है। तुम्हारे चाहने से भी वेश्या साबित न हुई, लेकिन नंबर लिखकर तुम्हारे अंदर की विकृति सामने जरूर आ गई। वादा करो कि जब तुम्हें इश्क से कुछ भी हासिल न होगा तब उन तस्वीरों को पोर्न साइट पर न चिपका दोगे कि ऊपर उठना बड़ा मुश्किल होता है और गिरने के लिए पाताल तक आसानी से लोग गिरते चले जाते हैं। वादा करो कि प्रेम को अभिलाषाओं की दुकान न समझोगे। प्रेम उपहारों और बटुए की गहराई तक सीमित न रहेगा। कल को बटुआ रहे न रहे, प्रेम जरूर रहेगा। वादा करो कि रूप न बदल लोगे। जिस रूह से प्रेम हुआ... सदियों बाद भी वही रूह दिखती रहेगा।

रजत सैनी
बी.ए. (ऑनर्स), राजनीति विज्ञान